ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

● *Vol-9 No. 2* ● *July-December 2020*

साहित्य और जीवन मूल्य

सुश्री नम्रता जोसफ,
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,
हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर

सारांश

मनुष्य के मन के भाव या विचार जब शब्द का रूप लेकर अभिव्यक्त होते हैं तो वह साहित्य कहलाता है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है वह हमें साहित्य में मिल जाता है इस प्रकार समाज में रहने वाले लोगों की संवेदना को हम साहित्य में कहानी, निबंध, नाटक, उपन्यास आदि के पात्रों के माध्यम से देख सकते हैं। मनुष्य ने समाज में रहने और जीवन जीने के लिए कुछ जीवन मूल्य विकसित किए है जो हमें एक दायरा प्रदान करते हैं और मानव में चिंतन शक्ति और बौध्दिक क्षमता को बढाते हैं। यही गुण हमें जानवरों से अलग और ज्यादा विकसित बनाते है। पर आधुनिक युग में बदलते परिवेश और आधुनिकता के बढने के कारण मानव द्वारा विकसित किए गए जीवन मूल्य परिवर्तित हो रहें हैं। जिस जीवन मूल्य के लिए मानव अपना सर्वस्व दांव पर लगा देता था वह आज सिर्फ बातों या किताबों तक ही सीमित रह गया है। मनुष्य के व्यवहार में नहीं। इसी साहित्य के माध्यम से हमें मनुष्य के उस खोए हुए जीवन मूल्य को फिर से वापस लाना होगा क्योंकि मनुष्य ही मूल्यों का निर्माता और भोक्ता है। प्रस्तुत संशोधन पत्र भारतीय समाज में साहित्य और जीवन मूल्य के दृष्टिकोण से विचार व्यक्त करती है।

कुंजी शब्द : साहित्य, जीवन मूल्य

उद्देश्य : भारतीय समाज में साहित्य और जीवन मूल्य के प्रभाव को ढूंढनें का प्रयास है।

संशोधन पद्धती : प्रस्तुत संशोधन पत्र द्वितीय तथ्य,साहित्य एवं विषय विशेषज्ञों से चर्चा पर आधारित है।

प्रस्तावना : भावों की अभिव्यक्ति जब शब्दों के माध्यम से होती है तब वह साहित्य कला बन जाती है। भावों का उद्गम स्थान हृदय कहलाता है, हदय में उठने वाले तरंग भाव कहलाते हैं। जब व्यक्ति किसी बाहरी वस्तु व्यक्ति अतिथियों से प्रभावित होता है तब हृदय अपने आप उसकी अभिव्यक्ति देने लगता है यही अभिव्यक्ति जब शब्दों के द्वारा बाहर निकलती है तब साहित्य कहलाती है ।

भारतीय समाज में साहित्य. साहित्य निरंतर समाज की गतिविधियों की क्रियात्मक अनुभूतियों का प्रतिपादन करता आ रहा है इसीलिए साहित्य को समाज की संवेदनाओं का कोष कहा जाता है । साहित्य में ही विभिन्न सामाजिक मान्यताएं सांस्कृतिक प्रतिमान तथा जीवन मूल्य प्रतिफलित होते हैं । साहित्य के माध्यम से समाज के सामाजिक, राजनीतिक , आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति की जाती है। साहित्य में कहानी एक ऐसी विधा है जिसमें समूचे मानव जीवन की अभिव्यक्ति हुई है ।

मानव एक विकासशील प्राणी है और विशाल सृष्टि का अंश है। मानव की स्वभाविक चिंतन शक्ति और बौद्धिक क्षमता से कुछ ऐसे जीवन के नैतिक मूल्य विकसित हुए हैं जो सारे विश्व में मान्य है । आदर्श मानव विश्व में राष्ट्र, जाति तथा ध र्म का विचार किए बिना समस्त मानव जाति की आर्थिक सांस्कृतिक नैतिक तथा भौतिक समृद्धि एवं स्वतंत्रता और प्रति के प्रति प्रबल निष्ठा रखता है। वह सार्वभौमिक, समृद्धि, स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और शांति की स्थापना में विश्वास रखता है।

जीवन मूल्य. मूल्य के आधार पर ही आज के आर्थिक युग में वस्तु के महत्व का आकलन किया जाता है। मूल्य की स्थिति किसी वस्तु में ना होकर मानव में है। मूल्य मानव की इच्छा की पूर्ति करता है, जीवन के रक्षण और विकास में सहायक होता है । यह मानव को आत्मसाक्षात्कार एवं आर्थिक विकास की ओर उन्मुख करता है।

भौतिक जगत में मूल्य का संबंध उपयोगिता से है। जीवन मूल्य एक धारणा है जिसका संबंध मानव से है। जीवन मूल्यों को ही मानव व्यवहार एवं समाज कल्याण की कसौटी माना जाता है। जीवन मूल्य स्वतंत्रता और समानता का प्रतिपादन करते हैं तथा एकता, समन्वय ,सामंजस्य और संतुलन को बनाए रखते हैं। व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके जीवन मूल्यों से किया जाता है। जीवन मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं समाज में व्यर्थ माने जाते हैं। सिद्धांत और मूल्य जीवन को ऊर्जा देते हैं समाज हो चाहे परिवार सब का संचालन कुछ आदर्शों और सिद्धांतों से

होता है यदि जीवन में इनका अभाव हो जाएं तो समाज का ढांचा गड़बड़ाने लगता है। यह आदर्शों तथा नियमों के द्वारा संचालित होता है इन्हीं के द्वारा जीवन मूल्य स्थापित होते हैं। मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होता है स्व प्रत्यक्षीकरण को प्राप्त करें। जब मानव जीवन का विश्लेषण और गुण दोष का विवेचन करता है तो अपने जीवन मूल्यों की तलाश करता है। यह मूल्य कभी भी जर्जर या नष्ट नहीं होते क्योंकि यह दृश्य मान नहीं होते इनका संबंध व्यक्ति के जीवन से है इनका निर्माण जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए जरूरी है। जिसमें सामाजिक नियमों की अवहेलना भी ना हो क्योंकि मूल्य परंपरागत है। मानव ने नैतिक आदर्शों से मूल्यों को पहचान कर विचारशील मानव की शारीरिक आवश्यकताओं पर नियंत्रण कर मानसिक वृत्तियों को जगाया है यही मूल्य है। अतः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य ने जिस सृष्टि की रचना की है जिसमें वह आवश्यक परिवर्तन लाता है उसके नियमों, मर्यादाओं और सिद्धांतों के निर्देशन में चल रहा है यह जीवन ही मानव जीवन चलाता है मानव सृष्टि के यह सिद्धांत और मर्यादा ही जीवन मूल्य कहलाते हैं।

21 वी सदी में भारतीय समाज में जीवन मूल्य :

21 वी सदी के भौतिकवादी विचारधारा ने लोगों को उपभोक्ता बना दिया है। जहां हर व्यक्ति एक वस्तु बनकर रह गया है। भूमंडलीकरण वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रभाव ने मूल्यों और संबंधों को भी नफा नुकसान के पैमाने पर परखा जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति और भारतीय संस्कृति के बीच के टकराव ने पारिवारिक भावनाओं को आहत किया है। परिवर्तन की संस्ति ने सामाजिक रिश्तो को खंडित किया है जिससे समाज में अनेक प्रकार के अंर्तद्वं उत्पन्न हुए हैं, जिसके प्रभाव से पारिवारिक बिखराव शुरू हो गया है व्यक्ति विघटन की समस्या उठ खड़ी हुई है। पति पत्नी के बीच प्रेम और माधुर्य संबंधों में कड़वाहट देखी जा सकती है। आज प्रेम के मायने बदल गए हैं प्रेम सिर्फ लेन–देन तक सीमित रह गया है। प्रेम के स्थान पर घृणा उपज रही है लोग एक दूसरे को समझने के बजाय तिरस्कार करने लगे हैं। राजनीति नीति विहीन होकर कुछ सीमित हाथों में जा सिमटी। राजनेता आज सेवक नहीं प्रशासक बन गए हैं मूल्य हीनता का आलम अब ऐसा है कि लोग एक दूसरें से कतराने लगे हैं।

बीसवीं सदी की पूर्वार्ध में यह देखा गया कि बहुत सारे लोग अध्यात्म की ओर मुड़ने लगे हैं गृहस्थ जीवन और सन्यास के बीच टकराहट की आहट सुनी जा सकती है पत्नी के साथ नहीं बनने से पति तुरंत दूसरा रास्ता अपना लेता है किंतु जड़ मजबूत नहीं होने से आंतरिक बेचैनी देखी जा सकती ह। सन्यासी जीवन साधना और संयम से ही साधा जा सकता है बेचैनी और विहलता से नहीं। इसी प्रकार पारिवारिक सुख और समृद्धि व संतुष्टि सहचर्य से प्राप्त होती है आरोप–प्रत्यारोप से नहीं। सफल सन्यासी जीवन की कामना संतुष्ट गृहस्थ जीवन से ही पूरी की जा सकती है आंतरिक द्वंद्व की भावना मनुष्य को थकाती है मंजिल तक नहीं पहुंचा सकती है।

अनेक लेखक और लेखिकाओं ने अपनी समकालीन स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों को देखा था। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक ऐसे कई तरह के प्रतिबंध उन पर लगे थे जिन्हें पारिवारिक स्तर पर घर से ही संचालित किया जा रहा था समसामयिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों को घर की दहलीज लांघने की इजाजत नहीं दी थी स्त्रियों की नौकरी करने की संस्ति अभी शुरू नहीं हुई थी। अनेक कथाकारों ने स्त्रियों की इस घुटन को महसूस किया और उन्हें पुरुष के वर्चस्व, उसके एकाधि ाकार को समाप्त करने की पूरी स्वतंत्रता प्रदान की।

रचनाकारों ने अपने इर्द गिर्द हो रहे परिवर्तनों को एहसास किया और देखा कि हमने बहुत कुछ हासिल कर लिया है किंतु उसके लिए संवेदनाएं नहीं है। हम अपने कर्तव्य से मुख मोड़ कर विपरीत कार्य करने लगे हैं व्यक्ति के अंदर एक दूसरे के लिए संवेदनाएं नहीं है स्वार्थ के धुंध में इतने अंधे हो गये है की अपने पराए का ख्याल नहीं है। आपसी मतभेद है पर हर जगह उसका साथ देते हैं आंतरिक पीड़ा में कराह रहे हैं फिर भी खुश रहने का दिखावा करते हैं व्यवहारिकता में जिंदादिली दिखाते हैं पर दिल मशान है सब दिखावटी जीवन जी रहे हैं। किसी को एक दूसरे को चोट पहुंचाने का अफसोस नहीं है। मनुष्य इंसान नहीं पाषाण बन गया है।

आज हम 21 वीं सदी में जी रहे हैं पर परिस्थितियां बदली नहीं है आज भी हम हर क्षेत्र में नफा नुकसान की चिंता पहले करते है। आज की राजनीति स्वार्थ केंद्रित हो गई है। सत्ता हासिल करने के लिए नेता किसी भी हद तक जाने से नहीं कतराते सेवा की भावना से दूर उनकी पहचान तो अब हवाला और घोटालों से होती है। आज सचमुच देश को नेता नहीं अच्छे नागरिक चाहिए आधुनिक प्रेम में संवेदना नहीं व्यापार नजर आता है। आधुनिक पति पत्नी के रिश्ते शर्तों और अनुबंधों पर टिके रहते हैं। आधुनिकता की आंधी में रिश्ते बिखर रहे हैं और उनके अंदर घुटन एवं कुंठा ने घर कर लिया है। आज हर व्यक्ति आंतरिक दबाव के द्वंद्व में जी रहे हैं। आधुनिक परिवार में परिवार के मायने बदल गए हैं। अब कोई किसी पर भरोसा नहीं करता पारिवारिक संबंध आवश्यकता

और अधिकार तक ही सीमित होकर रह गया है। संस्कृति और राजनीति का विषय अब धर्म सुरक्षा का कवच बन गया है भूमंडलीकरण के इस दौर में विज्ञान के नए अविष्कार होने संपूर्ण विश्व आपस मे जुड़ा अवश्य है पर व्यक्ति की मानसिक संकीर्णता ने उसे विखंडित कर और खूंखार बना दिया है। वैश्वीकरण और बाजारवाद ने मनुष्य को वस्तु बना दिया है मानव मूल्यों का हास हुआ है। धर्म की आड़ में पाखंड पनपा है धर्म का बाजारीकरण हो रहा है। धर्म के नाम पर राजनेता रोटियां पकाते और चंदे के नाम पर बाबाओं का संपत्ति संग्रहण जारी ह ो सन्यासी रोज बलात्कार और हत्या के जुर्म में जेल जा रहे हैं महिला सशक्तिकरण के नाम पर महिलाओं को सुविधा और अवसर दिए जा रहे हैं किंतु वे इसका गलत फायदा उठा रही है आज संपूर्ण विश्व संकीर्ण विचार धारा की प्रवाह में बहता जा रहा है। धार्मिक कट्टरता की जोड़ी अब सभी धर्मों में जकड़ गई है अब वे अपने अस्तित्व के डर से नहीं किंतु अपने वर्चस्व को लेकर ज्यादा खूंखार और संवेदनशील हो गए हैं।

उपसंहार : आज के इस बदलते दौर में जहां हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के बढने के कारण लगातार जीवन मूल्यों का हास हो रहा है। विश्व शांति की जगह एक देश दूसरे देश पर आक्रमण की तैयारी कर रहा है। एक ही परिवार में भाई भाई का गला घोंट रहा हैं। सभी एक दूसरे की आलोचना करने में लगे है। ऐसे माहौल में मानव मूल्यों को या जीवन मूल्यों को स्थापित करने पारिवारिक संबंधों को स्थापित करने में लोगों को प्रेरणा देने और उनका मार्गदर्शन करने में एक समृद्ध साहित्य की आवश्यकता है जो मानव में सोए हुए जीवन मूल्यों को जगा सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. *अग्रवाल, सुनीता धानुका. 2013. मध्यकालीन संत साहित्य और मानव मूल्य,अमन प्रकाशन, रामबाग कानपुर*
2. *सिंह,सुमन. 2011. हिंदी साहित्यकारों के सामाजिक सराकार, रोशनी पब्लिकेशंस, कानपुर*
3. *https://www.hindikunj.com/2020/06/bharatiya-jevan-mulya.html 8/12/2020*
4. *https://www.livehindustan.com/news//article1-story-23510.html10/12/2020*
5. *https://www.jansatta.com/duniya-mere-aage/price-of-life-school-ncert-books/49913/10/12/2020*